कपिल सुळादि

सिद्धिदायक शिष्यजन परिपाल परमा
शुद्धात्म सुगुणसांद्र सुखवारिधि
निद्रारहित निद्रारमण निर्विकार
चिद्देह सर्वकाल सुंदरसार
पद्मसंभव बलि प्रक्षालित पाद महा
हृद्रोगनाश वैकुंठवास
विद्यातीत विश्वनाटक नारायण
विद्य उद्धारकॆ उदधि सदना
सिद्धादि विनुत संतत पाताळवासि
बुद्धि विशाल महिम पापहारि
खद्योतवर्ण सकल व्याप्त आकाश अमित
बद्ध विच्छेद नाना रूपात्मका
अद्वैतकाया मायारमण राजीव नेत्रा
अद्वैय अनादि पुरुष चित्र
कर्दम मुनिसूनु विजय विठ्ठल कपिल
निर्दोषकरुणाब्धि सर्वराधारि ॥ १ ॥
ताळ – मट्ट
आदिमन्वंतरदि जनिसिद महदैव
आदिपॊरबॊम्म बॊम्मनय्य जीया
साधुजानर प्रिया संतत मुनितिलका
बोध शरीर भकुत मनोहर हरि
माधव सिरि विजय विठ्ठल विमलेशा
मोद मतिय कॊडुव कपिल भगवन्मूर्ति ॥ २ ॥

ताळ – त्रिविडि
घनमहिम गौणांडदॊळगॆ लीलॆयिंद
जनिसि मॆरॆदॆ बिंदु सरोवरदल्लि
मिनुगुव द्वय हस्त अप्राकृत काय
इननंते ऒप्पुव शिरोरुहवो
कनक पुत्थळियंते कांति त्रिभुवनक्कॆ
अनवरत तुंबि सूसुतलिदको
जननि देवहूतिगॆ उपदेशवनु माडि
गुण मॊदलाद तत्व तिळिसिदॆ
तनुविनॊळगॆ नीनॆ तिळिदु तिळिदॆ नित्य
जनरन्नु पालिसुव कपिलाख्यनॆ
अनुदिन निन्न ध्यानव माडि मणियिंद
ऎणिसुव सुजनक्कॆ ज्ञान कॊडुवॆ
ऎनॆगाणॆ निन्न लोचनद शक्तिगॆ सगर
जनप नंदनरन्नु भंगिसिदॆ
अनुमानविदकिल्ल निन्न नंबिद मूढ

मनुजनिगॆ महपदवि बरुवदय्य
मुनिकुलोत्तम कपिल विजय विठ्ठलरेय
ऎनगॆ योग मार्गवनु तोरॊ तवकदिंद ॥ ३ ॥
ताळ – अट्ट
कपिल कपिलयॆंदु प्रातःकालदलॆद्दु
सपुत सारिगॆयलि नुडिद मानवनिगॆ
अपजय मॊदलाद क्लेशगळॊंदिल्ला
अपरमित सौख्य अवन कुलकोटिगॆ
गुपुत नामविदु मनदॊळगिडुवुदु
कपट जीवरु ईतनु ऒब्ब ऋषियॆंदु
तपिसुवरु काणो नित्य नरकदल्लि
कृपण वत्सल नम्म विजय विठ्ठलरेय
कपिलावतार बल्लवगॆ बलु सुलभ ॥ ४ ॥
ताळ – आदि
बल हस्तदल्लि यज्ञशालॆयल्लि कं
गळकप्पिनल्लि हृदयस्थान नाभियल्लि
जलधि गंगा संगमदल्लि गमनदल्लि
तुलसि पत्रदल्लि तुरग तुरुविनल्लि
मलगुव मनॆयल्लि नैवेद्य समयदल्लि
बलुकर्म बंधगळु मोचकवागुवल्लि
चलुवनादवनल्लि विद्यॆ पेळुवनल्लि
फलदल्लि प्रतिकूलविल्लद स्थळदल्लि
बॆळॆद दर्भगळल्लि अग्नियल्लि हरिव
जलदल्लि जांबुद नदियल्लि श्लोकदल्लि
बलिमुख बळगदल्लि आचारशीलनल्लि
घळिगॆ आरंभदल्लि पश्चिम भागदल्लि
पॊळॆव मिंचिनल्लि बंगारदल्लि इनितु
काल कालक्कॆ बिडदॆ स्मरिसु कपिल परमात्मन्न
गॆलवुंटु निनगॆलवॊ संसारदिंद वेग
कलियुगदॊळगिदॆ कॊंडाडिदवरिगॆ
खळर अंजिकॆयिल्ल निंदल्लॆ शुभयोग
बलवैरिनुत नम्म विजय विठ्ठलरेया
इळॆयॊळगॆ कपिलावतारनागि नम्म भारवहिसिद ॥ ५ ॥
जतॆ
तम परिच्छेद ईतन स्मरणॆ नोडु हृ-
त्कमलदॊळगॆ विजय विठ्ठलन्न चरणाब्जा ॥ ६ ॥